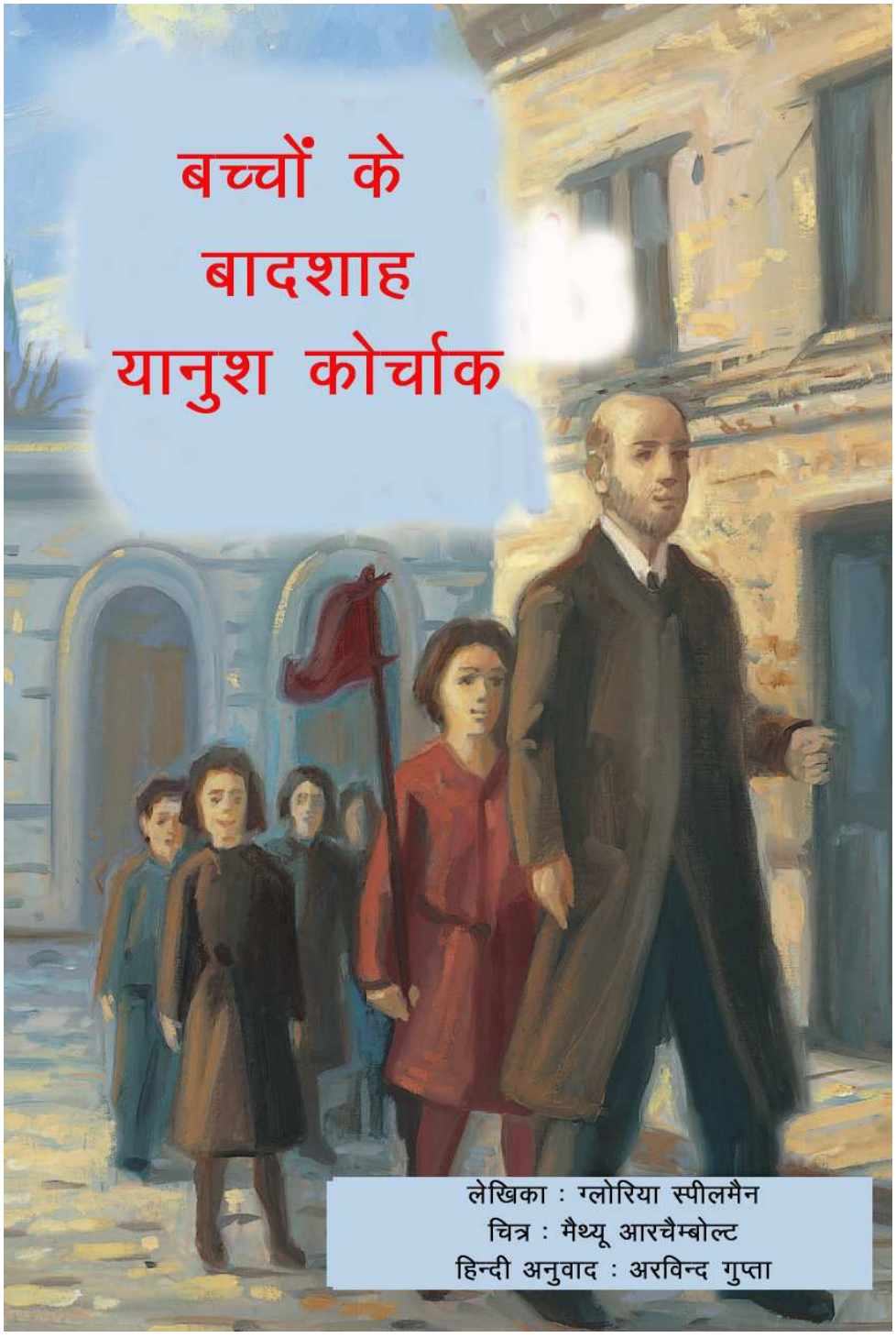

लेखिका : ग्लोरिया स्पीलमैन
चित्र : मैथ्यू आरचैम्बोल्ट
हिन्दी अनुवाद : अरविन्द गुप्ता

वॉरसॉ में बचपन

खिड़की से हेनरिक गोल्डस्मिथ ने झाँका तो देखा कि चौकीदार का बेटा अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था. सभी बच्चे मज़े में खेल रहे थे. हेनरिक भी उनके साथ खेलना चाहता था. काश वो भी खेल पाता. परन्तु अमीर होने के कारण उसे सड़क पर गरीब, चिथड़े पहने बच्चों के साथ खेलने की इज़ाज़त नहीं थी.

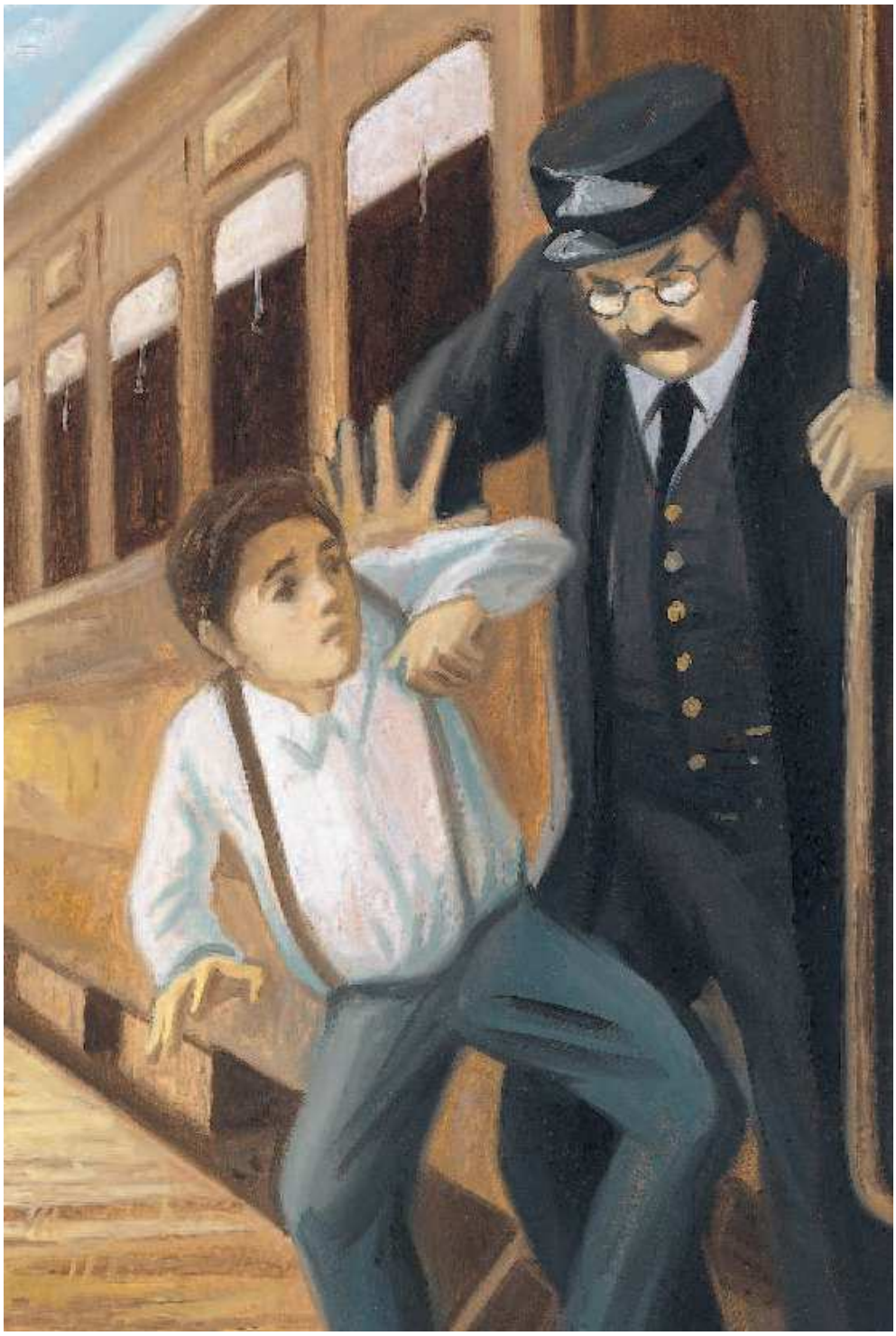

हेनरिक को बड़े लोगों की बातें बिलकुल समझ में नहीं आती थीं. वैसे बड़ों का काम, बच्चों की देखभाल करना था, परन्तु अक्सर वे बच्चों के साथ बुरा बर्ताव करते थे. टीचर, छात्रों को भला क्यूं पीटते थे? बस और ट्राम में बड़े बच्चों को क्यूं एक ओर धकेलते थे? माता-पिता सीलिया और जोसफ भी हेनरिक के मन की बातें अच्छी तरह नहीं समझते थे. हेनरिक घंटों, खिलौनों से खेलता रहता था. उसे यह काल्पनिक दुनिया बहुत अच्छी लगती थी. पर जैसे-जैसे हेनरिक बड़ा हुआ, माता-पिता उसके भविष्य के बारे में परेशान रहने लगे.

उनका बेटा अभी भी छोटे बच्चों के खेलों से क्यूं खेलता था? माँ कुछ ज्यादा ही परेशान रहती थीं - हेनरिक के मन में कुछ बड़ा बनने की चाहत, अभिलाषा ही नहीं थी. पिता उसे गालियाँ देते - उसे पत्थर, गधा और डरपोक बुलाते.

हेनरिक हमेशा एक ऐसी दुनिया के बारे में सपने संजोता जिसमें कोई बच्चा गरीब न हो और हर बच्चे को प्यार मिले. शायद ऐसी काल्पनिक दुनिया में पैसों की ज़रुरत ही न हो. वहां पर कोई बच्चा रईस या गरीब न हो - और सब बच्चे मिलजुल कर एक-साथ खेलें. जब हेनरिक ग्यारह साल का था तो उसके पिता की तबियत ख़राब हो गयी. पिता के इलाज, घर खर्च और बच्चों को खाना खिलाने के लिए माँ को क़र्ज़ लेना पड़ा. इसके लिए माँ ने बहुत सा महंगा सामान बेंचा और घर चलाने के लिए कुछ कमरों में किरायेदार भी रखे. हेनरिक भी कुछ काम करने लगा. वो रईस बच्चों की ट्यूशन लेता. सात साल बाद पिता जोसफ का देहांत हुआ और अब हेनरिक की ज़िन्दगी पहले से भी ज्यादा स्याह हो गयी. इस उबाऊ ज़िन्दगी से बचने के लिए हेनरिक कवितायेँ, नाटक और कहानियां लिखने लगा. जब एक संपादक ने उसके लेखों का मज़ाक उड़ाया, तो हेनरिक ने तुरंत लिखना बंद कर दिया. फिर उसने कोई उपयोगी धंधा अपनाने की सोची और डॉक्टर बनना तय किया.

यानुष कोर्चाक - डॉक्टर

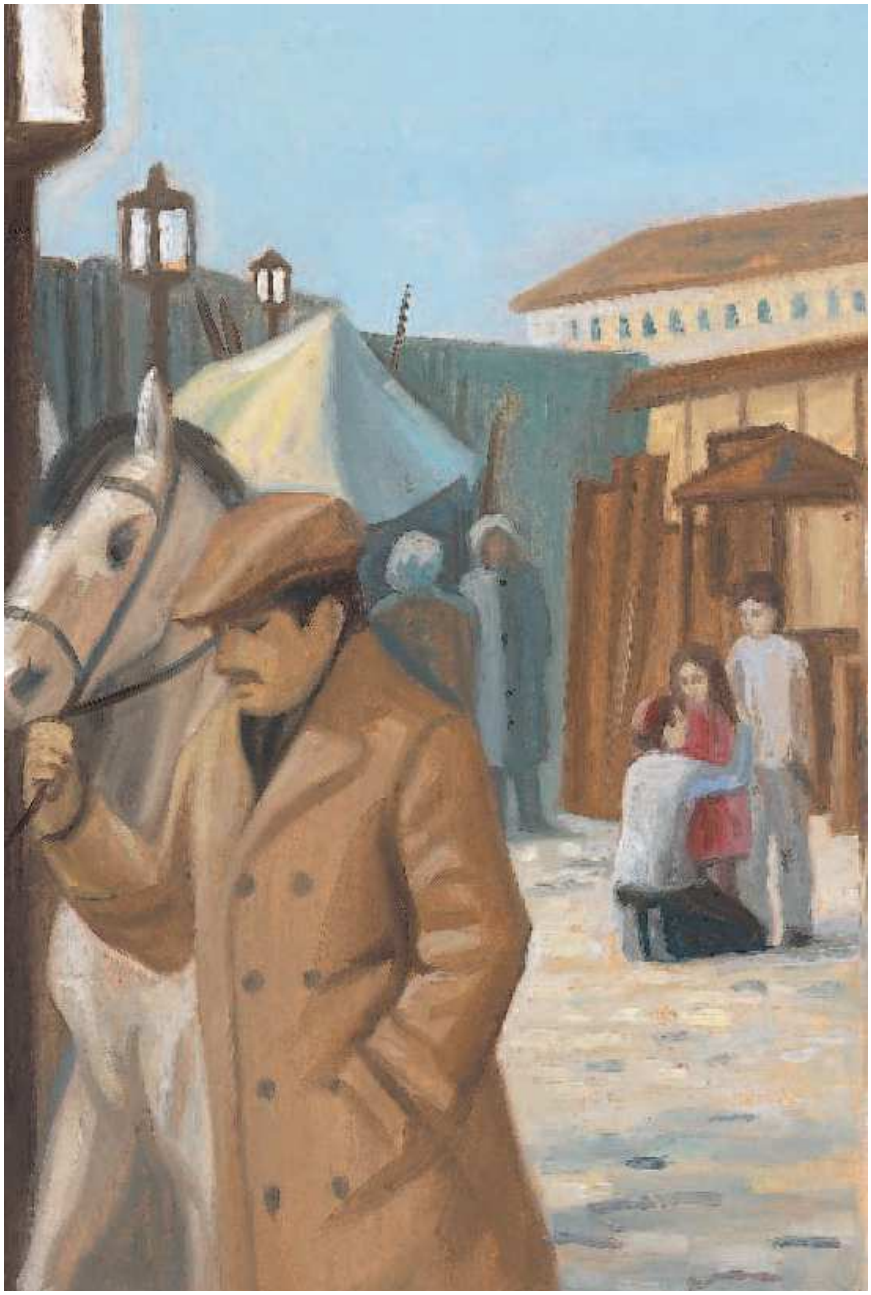

डॉक्टर बनने के बाद भी युवा कोर्चाक को वही चिथड़े पहने बच्चे याद आते, जिनके साथ वो बचपन में खेल नहीं पाया था. धीरे-धीरे हेनरिक वॉरसॉ की सबसे गरीब बस्तियों और झोपड़-पट्टियों में घूमने लगा. वो बच्चों को पढ़ाता और उन्हें कहानियाँ सुनाता. बच्चे उस दयालु, लाल बालों वाले युवा के आने का बेसब्री से इंतजार करते. हेनरिक के चेहरे पर सदा मुस्कान होती और हाथ में बच्चों के लिए मिठाई की गोलियां होतीं.

हेनरिक ने फिर दुबारा लिखना शुरू किया. उसने उन गरीब लोगों के बारे में लिखा जो अपने बच्चों को खाना खिलाने में असमर्थ थे. उसने कचरे के मलबे में बसी, लोगों से भरी झोपड़-पट्टियों के बारे में लिखा और साथ-साथ अमीरों द्वारा बितायी अय्याशी की ज़िन्दगी के बारे में भी लिखा. अख़बारों और पत्रिकायों में हेनरिक के लेख धड़ल्ले से छपने लगे. अब लोग हेनरिक गोल्डस्मिथ को उसके उपनाम “यानुष कोर्चाक” के नाम से जानने लगे. यानुष की कहानियां, अमीर लोगों को भी बहुत पसंद आतीं. तमाम लोग वॉरसॉ के मशहूर डॉक्टर-लेखक से मिलने को उत्सुक और बेचैन रहते. कई धनी लोगों ने यानुष कोर्चाक से मिलने की एक नयी तरकीब निकाली. वे बच्चों के बीमार होने का झूठा बहाना बनाकर डॉक्टर से मिलने आते.

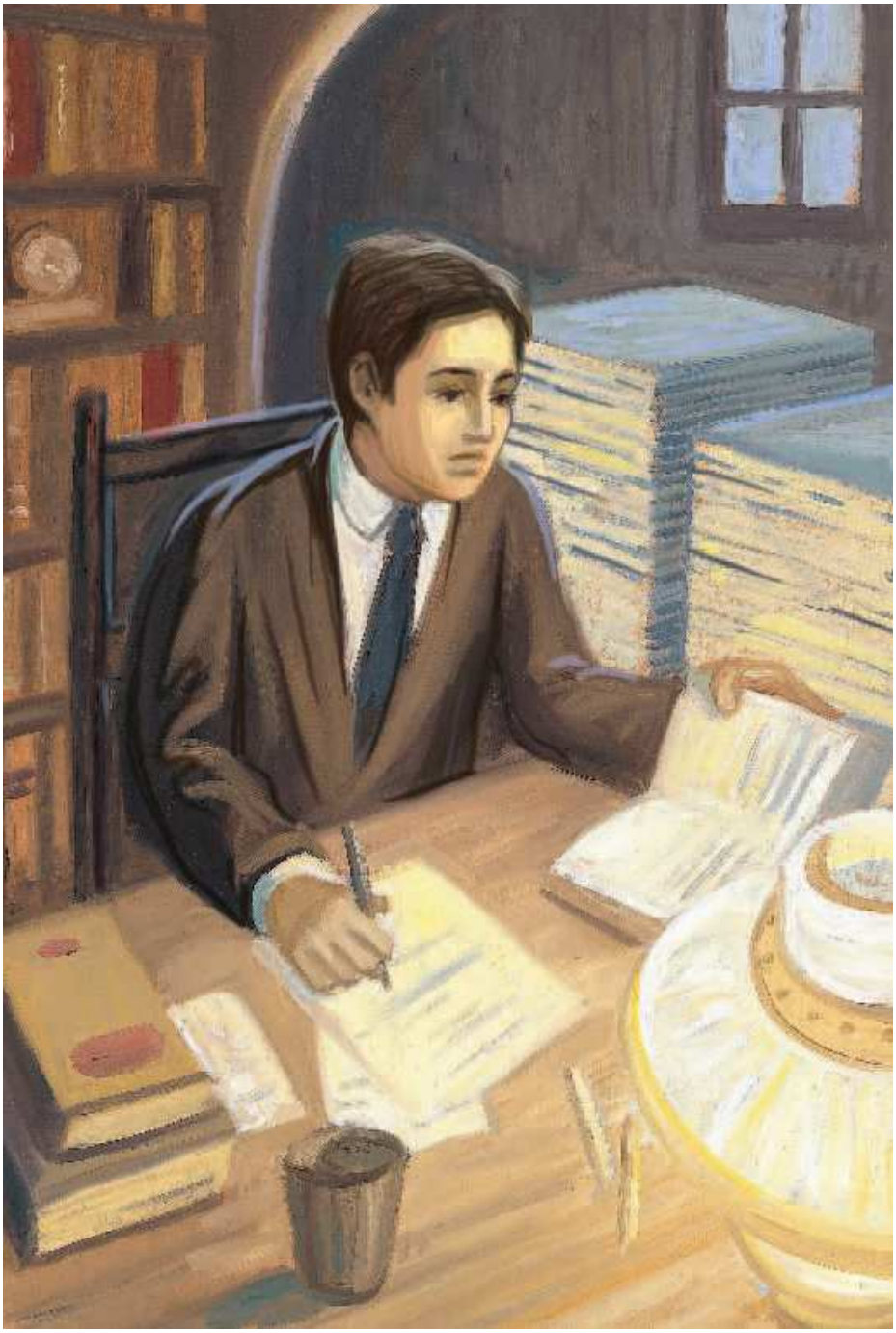

सब लोगों को यह पता था कि डॉक्टर कोर्चाक कभी भी बीमार बच्चे के घर जाने से मना नहीं करेंगे. रईस लोगों की इन चालों पर डॉक्टर को बहुत गुस्सा आता. पर अमीर लोगों से डॉक्टर को ऊंची फीस मिल जाती, और उससे वो गरीब मरीजों के लिए दवाईयां खरीद पाते. ज़्यादातर डॉक्टर गरीब लोगों का इलाज इसलिए नहीं करते थे क्यूंकि वो फीस नहीं दे सकते थे. परन्तु डॉक्टर कोर्चाक बिलकुल अलग थे. वो मुफ्त दवाईयां देते, रात में भी ख़ुशी-ख़ुशी मरीजों के घर जाते और बहुत कम फीस लेते. इस कारण बहुत से डॉक्टर और केमिस्ट उनसे नाराज़ रहते. परन्तु डॉक्टर कोर्चाक के मरीज़ उनसे बेहद खुश थे. उनकी गर्मजोशी, हंसी, मजेदार कहानियां और चुटकुले सुनने के बाद एकदम सहमे और डरे हुए बच्चे भी, आराम से सूप पीते और कड़वी दवा खाते.

यानुष कोर्चाक - अनाथों के पिता

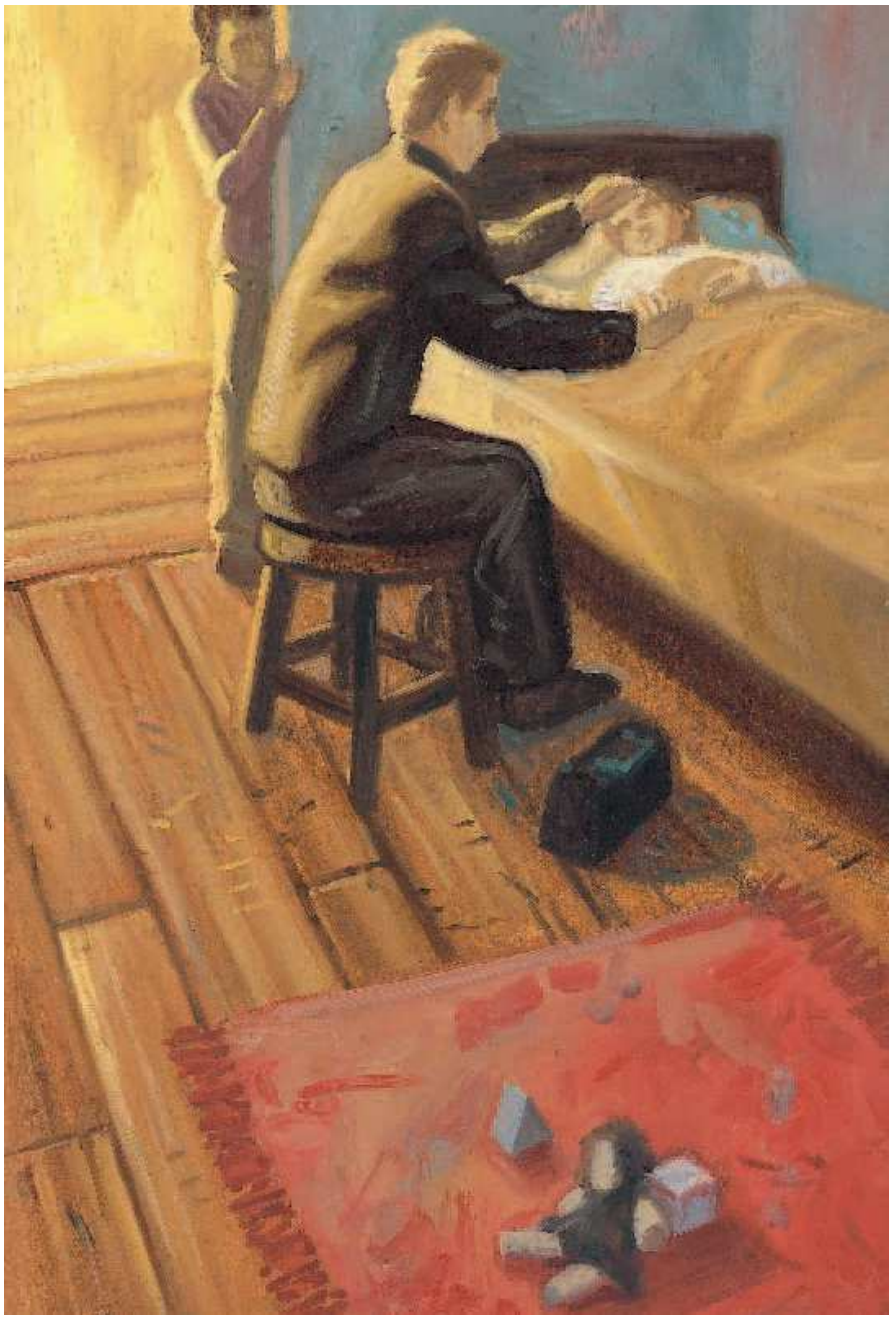

इस सबके बावजूद डॉक्टर कोर्चाक बेचैन रहते. वो लगातार सोचते, मैं इन गरीब बच्चों की मदद के लिए और क्या कर सकता हूँ? दवाईयां और लेख गरीबों के हालात सुधारने में नाकामयाब रहे थे. इसलिए जब ऑर्फ़न ऐड सोसाइटी (अनाथों की मददगार संस्था) ने उन्हें एक नए अनाथालय का निदेशक बनने के लिए आमंत्रित किया तो उन्होंने उसे तुरंत स्वीकार कर लिया. दो वर्ष की कठिन मेहनत के बाद उन्होंने एक आदर्श अनाथालय स्थापित किया. 1912 में, जब 92, क्रोचमलना स्ट्रीट पर अनाथालय का उद्घाटन हुआ तो वो एकदम आलीशान था.

शायद वॉरसॉ में वो पहले इमारत थी जहाँ बिजली और सेंट्रल हीटिंग थी. वहां बड़ी-बड़ी खिड़कियों से तेज़ धूप और ताज़ी हवा अन्दर आती थी. इस अनाथालय में रहने वाले बच्चे सबसे गरीब घरों के थे. बहुत कम ने फ्लश वाले शौचालय देखे थे.

इन बच्चों को साफ़ चादरों पर सोने का पहले कभी मौका नहीं मिला था. उनमें से कुछ बच्चे एक अन्य अनाथालय से आये थे जहाँ उन्हें भूखा रखा गया था और पहनने को चिथड़े मिले थे. डॉक्टर कोर्चाक और उनकी सहायक स्टेफा विलसायना ने बच्चों की देखभाल और सुरक्षा की पूरी ज़िम्मेदारी ली. सबसे छोटे बच्चों के खटोलों और पालनों में छेद थे जिसमें से वो अपने हाथ निकालकर दूसरों के हाथ पकड़ सकें. डॉक्टर कोर्चाक अक्सर रात को उठकर घबराये हुए और रोते बच्चों को सांत्वना और दवा देते.

डॉक्टर कोर्चाक बच्चों के बाल काटते. उन्होंने बच्चों को, जूतों के फीते बांधना और पालिश करना सिखाया. वो मेजें साफ़ करते, फर्श पोछते और आलू छीलते. जब लोग मशहूर डॉक्टर कोर्चाक से मिलने आते, वो अक्सर वे उन्हें चौकीदार समझते. वैसे बच्चों के पास बहुत कम सामान था, पर डॉक्टर कोर्चाक ने हर बच्चे को ताले वाली एक दराज़ दी थी जिससे बच्चे अपनी छोटी-मोटी चीज़ों को सुरक्षित रख सकें. यह खज़ाना - कोई पुराना फोटो, सूखा फूल या कोट का पुराना बटन हो सकता था. इन बच्चों के लिए अनाथालय उनका पहला घर था और डॉक्टर कोर्चाक उनके पिता थे.

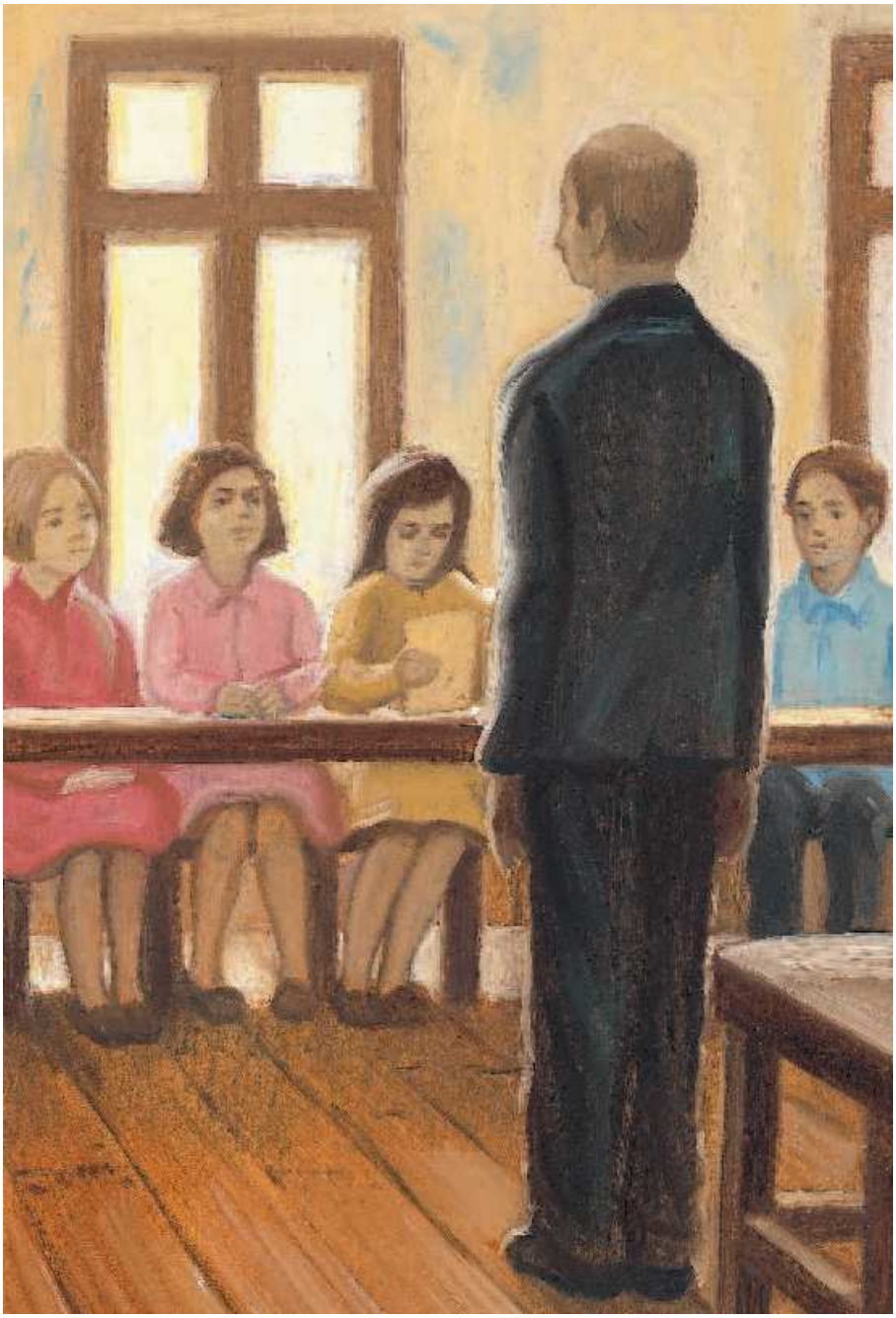

डॉक्टर कोर्चाक अनाथालय को “बच्चों का गणतंत्र” बुलाते थे. वहां पर वाकई में बच्चों की सरकार और एक कचेहरी भी थी, जहाँ बच्चे ही जज थे. वे ख़राब बर्ताव, या चोरी करने वाले बच्चों को सजा सुनाते थे. एक बार डॉक्टर कोर्चाक को खुद अपनी गलतियों के लिए कोर्ट में पेश होना पड़ा. उनकी गलती? एक बार उन्होंने बिना अनुमति के खाना खाया था, दूसरी बार उन्होंने एक बच्चे को कोने में खड़ा किया था. तीसरी बार उन्होंने अनाथालय का नियम तोड़ा था और सीढ़ियों की बजाये रेलिंग से फिसलकर नीचे उतरे थे. तीनों बार केस की सुनवाई हुई पर जज अपने प्रिय डॉक्टर को कोई कड़ी सजा नहीं दे पाए.

यानुष कोर्चाक - बच्चों के लेखक

रात को स्टेफा और डॉक्टर बच्चों को प्यार से थपकी देकर सुलाते देते. उसके बाद डॉक्टर कोर्चाक अनाथालय की सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर अपने कमरे में जाते और वहां अपनी कुर्सी पर बैठते. वो लेख और पुस्तकें लिखते जिससे कि बड़े लोगों को छोटे बच्चों की दुनिया समझने में मदद मिले. वो बच्चों के लिए कहानियां और उपन्यास लिखते जिससे कि वे, बड़ों की दुनिया को बेहतर समझ पायें. उनका एक उपन्यास है "किंग मैट द फर्स्ट" - इसमें उन्होंने एक ऐसी दुनिया और समाज रचा है जहाँ के नियम-कानून बच्चों और बड़ों दोनों के लिए न्यायपूर्ण हों. इस उपन्यास को पूरे पोलैंड में बहुत प्रसिद्धि मिली.

उनकी दो अन्य मशहूर किताबें हैं - "कंफेशंस ऑफ़ ए बटरफ्लाई" और "वेन शाल आई बी यंग अगेन". कोर्चाक पोलैंड में बच्चों के सबसे चहेते लेखक बने.

डॉक्टर कोर्चाक मानते थे कि बच्चों को अपने सपने, उम्मीदें और डर बाँटने के ज़रुरत होती है. इसलिए 1926 में उन्होंने एक "बच्चों का अखबार" शुरू किया, जिसमें लिखने के लिए बच्चों को पैसे दिए जाते थे. छोटे बच्चे जो अभी लिख नहीं पाते थे, उन्हें संपादक के कमरे में जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था. वहां वे बड़े बच्चों को मुंह-जुबानी अपनी कहानियाँ सुनते, जिन्हें बाद में लिखा जाता था. बच्चों को क्यूं अपना खुद का अखबार हो? यह बात वयस्कों और बड़ों को अभी तक समझ में नहीं आई थी. परन्तु साल भर में ही डॉक्टर कोर्चाक के अखबार "लिटिल रिव्यु" के पोलैंड में हजारों पाठक बने. प्रसिद्धि के कारण डॉक्टर कोर्चाक को एक "रेडियो शो" आयोजित करने का निमंत्रण मिला. पूरे पोलैंड में बच्चे अपने परिवार समेत रेडियो से सटकर बैठते और बहुत चाव से डॉक्टर कोर्चाक की गर्म और आरामदायक आवाज़ सुनते. कभी वो परीकथाएँ सुनते, तो कभी मज़ेदार कहानियां. पर ज़्यादातर वो दुनिया में चल रही घटनायों के बारे में समझाते.

बदलती दुनिया

92, क्रोचमलना स्ट्रीट के बाहर की दुनिया बहुत तेज़ी से बदल रही थी. अडोल्फ़ हिटलर और उसकी नात्सी पार्टी का जर्मनी में राज था, और अब वो पूरे यूरोप पर राज करने का सपना देख रही थी. नात्सी फौज़ ने पोलैंड पर आक्रमण किया और वॉरसॉ पर बम्ब बरसाए. हिटलर और नात्सियों को यहूदियों से नफरत थी. डॉक्टर कोर्चाक और क्रोचमलना स्ट्रीट में रहने वाले सारे बच्चे यहूदी थे.

नात्सियों ने यहूदियों की गतिविधियों पर लगाम लगाने के लिए नए नियम-कानून बनाये. यहूदी बच्चों के पार्कों में खेलने पर मनाही लगी. यहूदी स्कूलों को बंद किया गया. नात्सियों ने, यहूदी दुकानों और कारखानों पर कब्ज़ा किया. जिन उद्योगपतियों ने अनाथालय की मदद की थी, वे अब खुद कंगाल हो गये थे. उन्होंने डॉक्टर कोर्चाक से अनाथालय बंद करके बच्चों को उनके घर भेजने को कहा. परन्तु डॉक्टर कोर्चाक ने इसका विरोध किया.

1940 में नात्सियों ने वॉरसॉ की 73 सड़कों को, चारदीवारी से घेरा और यहूदियों को जबरदस्ती वहां जाकर रहने को मजबूर किया. यह इलाका "वॉरसॉ घेटो" के नाम से जाना गया. डॉक्टर कोर्चाक के दोस्तों ने उनसे घेटो में शिफ्ट न करने की अपील की. वे डॉक्टर कोर्चाक को कहीं और छिपाकर सुरक्षित रखना चाहते थे. पर वे डॉक्टर को तो छिपा सकते थे, पर इतने सारे अनाथ बच्चों को नहीं.

डॉक्टर कोर्चाक के लिए अपने प्यारे बच्चों से दूर रहना संभव नहीं था. इसलिए, वो, स्टेफा व अन्य शिक्षकों और बच्चों के साथ घेटो में शिफ्ट हुए. "किंग मैट" का झंडा उठाकर वे एक पुराने स्कूल में जाकर बसे. घेटो की गरीब बस्ती में एकदम अकाल था. वहां खाने को कुछ भी नहीं था. डॉक्टर कोर्चाक खुद भूखे और थके थे. पर फिर भी वो रोजाना सड़कों पर घर-घर जाकर बच्चों के लिए भोजन, ईंधन और पैसों की भीख मांगते. बस्ती घुटन और बीमारियों से भरी थी. उससे रोज़ बच्चे मर रहे थे. पर डॉक्टर कोर्चाक ने बहुत कोशिश करके और दवाएं देकर उन्हें

जिंदा रखा. पर इन विषम परिस्थितियों में भी डॉक्टर कोर्चाक बच्चों के लिए नए-नए सपने देख रहे थे. बच्चे रोज़ स्कूल जाएँ उन्होंने यह सुनिश्चित किया. वे अभी भी बच्चों को नाटक और संगीत कार्यक्रमों के लिए लेकर जाते. बस्ती के लोगों के लिए बच्चे खुद बनाये नाटक और कठपुतलियों के कार्यक्रम पेश करते. कोर्चाक को रबीन्द्रनाथ ठाकुर की कहानियां और नाटक बहुत पसंद थे और अकसर उनके बच्चे स्कूल में "पोस्ट मास्टर" का मंचन करते थे.

यानुष कोर्चाक और बच्चों ने वॉरसॉ छोड़ा

नात्सियों ने यहूदियों से काम लेने के लिए उन्हें पूर्व की ओर ले जाने की घोषणा की. पर यह भी अफवाएं उड़ीं कि वे वास्तव में यहूदियों को "कंसंट्रेशन कैम्पस" में मौत के घाट उतारने के लिए ले जा रहे थे. अगस्त 1942 के एक दिन नात्सियों ने डॉक्टर कोर्चाक के अनाथालय का दरवाज़ा खटखटाया. उन्होंने सबको मालगाड़ी वाले स्टेशन पर इकट्ठा होने को कहा. इसके लिए उन्हें सिर्फ पंद्रह मिनट का समय दिया गया. सभी बच्चे सड़क पर बाहर आये.

डॉक्टर कोर्चाक सबसे आगे थे. उनके पीछे बच्चे थे - चार-चार की जोड़ियों में. बच्चों के हाथों में छोटी-छोटी गुड़ियाँ थीं जिन्हें बच्चों के लिए बहुत प्यार से बनाया गया था. साथ में स्टेफा और स्कूल के टीचर भी थे. सबने 16-किलोमीटर की पैदल यात्रा की और मालगाड़ी वाले स्टेशन पहुंचे. उनके साथ "किंग मैट" का झंडा भी था.

स्टेशन पर सभी को मालगाड़ियों के डिब्बों में भरा गया और ट्रेब्लिन्का के "कंसंट्रेशन कैंप" ले जाया गया. वहां पर एक जर्मन अफसर ने डॉक्टर कोर्चाक को पहचाना. उसने डॉक्टर कोर्चाक के किताबों के जर्मन अनुवाद पढ़े थे. अफसर, कोर्चाक की किताबों का मुरीद था. उसने डॉक्टर कोर्चाक को वहां से चले जाने की इजाज़त दी. पर डॉक्टर कोर्चाक उन अनाथ बच्चों के माँ-बाप, भाई-बहन, दादा-दादी सबकुछ थे. ऐसी परिस्थिति में वो भला बच्चों को अकेला कैसे छोड़ सकते थे? डॉक्टर कोर्चाक ने जाने से साफ़ इनकार किया. उसके बाद सभी को नात्सियों ने गैस की भट्टी में फूंक डाला.

आज ट्रेब्लिन्का के कब्रगाह में 1700 पत्थर गड़े हैं. उनमें से सिर्फ एक पर लिखा है:

"यानुष कोर्चाक (हेनरिक गोल्डस्मिथ) और बच्चे"

यानुष कोर्चाक ने बच्चों की ज़रूरतों और उनके अधिकारों के बारे में लिखा. डॉक्टर कोर्चाक के जीवन और उनके विचारों से प्रभावित होकर पोलैंड ने "इंटरनेशनल डिक्लेरेशन ऑफ़ चिल्ड्रेनस राइट्स" का प्रस्ताव रखा. दस साल बाद 20 नवम्बर 1989 को संयुक्त राष्ट्र संघ ने "कन्वेंशन ऑन द राइट्स ऑफ़ द चाइल्ड" बिल को अपनी मान्यता दी. यानुष कोर्चाक सच में बच्चों के मसीहा थे.

उनका नारा "बच्चे दुनिया के सबसे पुराने सर्वहारा हैं!" सदा हमारे कानों में गूंजेगा. बाद में मशहूर पोलिश फिल्म निर्माता आंद्रे वाजदा ने यानुष कोर्चाक के ऊपर "कोर्चाक" नाम से एक फिल्म बनायी.